

विठ्ठलेशस्तवः


viThThaleshastavaH


sanskritdocuments.org

March 17, 2018

---

viThThaleshastavaH

——  
विठ्ठलेशस्तवः

——  
Sanskrit Document Information



---

Text title : viThThaleshastavaH

File name : viThThaleshastavaH.itx

Category : vishhnu, krishna, puShTimArgIya, raghunAthajI

Location : doc\_vishhnu

Author : raghunAthajI

Proofread by : PSA Easwaran psawaswaran at gmail.com

Description/comments : puShTimArgIya stotraratnAkara

Latest update : February 28, 2018

Send corrections to : sanskrit@cheerful.com

---

This text is prepared by volunteers and is to be used for personal study and research. The file is not to be copied or reposted without permission, for promotion of any website or individuals or for commercial purpose.


**Please help to maintain respect for volunteer spirit.**

---

March 17, 2018

*sanskritdocuments.org*

---



विहृलेशस्तवः



न मन्त्रे न तन्त्रे न यं ज्ञानसिद्धी-  
न वैकुण्ठबुद्धिस्तु वैकुण्ठलोके ।  
गतिर्विहृलेशे रतिर्विहृलेशे  
मतिर्विहृलेशे सदा वै ममास्तु ॥ १ ॥

पदाभोरुडाभोविभिन्नार्तितापे  
कृपाद्दृक् स्वकैतादृशोदारशीले ।  
गतिर्विहृलेशे रतिर्विहृलेशे  
मतिर्विहृलेशे सदा वै ममास्तु ॥ २ ॥

न नाके वराके न राकेशयाने  
पिनाकेशलोके न वा केविरभ्ये ।  
गतिर्विहृलेशे रतिर्विहृलेशे  
मतिर्विहृलेशे सदा वै ममास्तु ॥ ३ ॥

यदालोकतस्तोकतोऽपि क्षणेन  
प्रमुक्तो भवेल्लोकतः शोकतोऽयम् ।  
गतिर्विहृलेशे रतिर्विहृलेशे  
मतिर्विहृलेशे सदा वै ममास्तु ॥ ४ ॥

स्मृतिर्वा मतिर्वा कदा वा यदा वा  
यथा वा तथा स्यात्पदार्थाः कियन्तः ।  
गतिर्विहृलेशे रतिर्विहृलेशे  
मतिर्विहृलेशे सदा वै ममास्तु ॥ ५ ॥

मडामोडदग्धोऽपि कालाग्निदग्धो  
विदग्धा भवेत्स्नेहदृष्ट्याऽपि यस्य ।  
गतिर्विहृलेशे रतिर्विहृलेशे  
मतिर्विहृलेशे सदा वै ममास्तु ॥ ६ ॥

यदङ्गीकृतं शुवमङ्गीकरोति  
त्रिभङ्गी स्वयं वेणुरङ्गी प्रभुर्यत् ।  
गतिर्विहृलेशे रतिर्विहृलेशे  
मतिर्विहृलेशे सदा वै ममास्तु ॥ ७ ॥

शरण्योऽतिधन्यो धरण्यां वरेण्यो  
वरीवर्ति गण्यो यदन्यो न कोऽपि ।  
गतिर्विहृलेशे रतिर्विहृलेशे  
मतिर्विहृलेशे सदा वै ममास्तु ॥ ८ ॥

सदानन्दरूपः सदानन्दरूपा-  
त्मनाऽऽनन्दलीलारसं यो ददाति ।  
गतिर्विहृलेशे रतिर्विहृलेशे  
मतिर्विहृलेशे सदा वै ममास्तु ॥ ९ ॥

न भक्तिर्न मुक्तिर्न वै सर्वशक्ति-  
र्विरक्तिर्न युक्तिस्ततो भक्तिरुक्ता ।  
गतिर्विहृलेशे रतिर्विहृलेशे  
मतिर्विहृलेशे सदा वै ममास्तु ॥ १० ॥

ॐति श्रीरघुनाथशुद्धतो विहृलेशस्तवः समाप्तः ।

Proofread by PSA Easwaran psaeaswaran at gmail.com

---

—  
*viThThaleshastavaH*

pdf was typeset on March 17, 2018

—

Please send corrections to [sanskrit@cheerful.com](mailto:sanskrit@cheerful.com)

